हमने मंदिर बनाया

हमने उपाश्रय बनाया • हमने स्थानक बनाया

हमने तेरापंथ भवन बनाया • हमने स्कूल बनाया • हमने धर्मशाला बनाई

हमने अभी तक मानवता का सर्वश्रेष्ठ कार्य ऐसे

अनाथाश्रम

का निर्माण किया है क्या ?

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट

तपागच्छाधिपति प. पू. आचार्य
श्री विजय रामसूरीश्वरजी महाराजा
(डहेलावाले)

गच्छाधिपति प. पू. आचार्य
श्री विजय अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजा

अनाथ आश्रम प्रणेता, गुरुराम-अभय शिशु
प. पू. गणिवर्य **श्री जिनरत्नविजयजी म. सा.**

जिनशासन के गीतार्थ गच्छनायक द्वारा प्राप्त कृपापत्र

परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद्
विजय अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजा

રાધનગામ = ઔરંગાબાદ
તા ૩૦-૧૨-૨૦૨૧

મુંબઈ જિનભક્તિ માનવસેવા ટ્રસ્ટ
ધર્મલાભ

ટ્રસ્ટદ્વારા અનાથ બાળકોને સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિનું સિંચન કરી મા-બાપ સ્વરૂપે સેવા-કરવાનું કાર્ય કરી રહ્યા છો તે વર્તમાન સમય અને સંયોગોને અનુરૂપ છે
આવા. સૌનો સાથ સૌનો વિકાસનું સૂત્ર સાર્થક બનશે
લેખ: વિજયઅભયદેવસૂરિ

तपागच्छप्रवर समिति के कार्यवाहक प. पू. गच्छाधिपति श्री विजय
अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजा

|| શ્રી સ્તંભન પાર્શ્વનાથાય નમઃ ||

જિનભક્તિ માનવ સેવાશ્રમ ટ્રસ્ટ
મુંબઈ

ધર્મલાભ
એજ સંસ્કરણ, શિક્ષાના માધ્યમે અનાથ બાળકોને તમે સમાજમાં આદર્શ બાળક બનાવવાનું સુંદર કાર્ય કરી રહ્યા છો.

સ્નેહ જિનશાસન તમારી પહેલી એવી સંસ્થા હશે કે જે અનાથ બાળકો માટે કાર્ય કરી રહી છે.

ગણિવર્યશ્રી જિનરત્નવિજયજી મ. સા. ના માર્ગદર્શનથી ૧૪૦૦ જેટલા બાળકોમાં તમે આર્યત્વ જૈનત્વના સંસ્કારોનું વાવેતર કર્યું, તે ખૂબજ અનુમોદનીય ને અનુકરણીય છે.

ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટીઓને ખૂબ ખૂબ આશીર્વાદ. આવનારા વર્ષોમાં માનવતા ક્ષેત્રે વિશિષ્ટ કાર્યો કરતાં રહો તેવી મંગલ પ્રેરણા.

તપાગચ્છાધિપતિ આ. ભ. શ્રી મનોહરકીર્તિસાગરસૂરિ મ. સા.

मनोहरकीर्ति सागरसूरि

तपागच्छाधिपति प. पू. आचार्य भगवंत श्रीमद्
मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा

स्नेह • संस्कार • शिक्षा

धर्मानुरागी सुश्रावकश्री....

पक्षी का आश्रय स्थान वृक्ष है।
सिंह का आश्रय स्थान गुफा है।
चींटी का आश्रय स्थान दर है।
मनुष्य का आश्रय स्थान घर है।
जल का आश्रय स्थान नदी, समुद्र है।

विश्व की हर वस्तु एवं हर व्यक्ति आश्रय स्थान के बिना रह नहीं सकता है।

बालक का आश्रय स्थान माता की गोद है। माता-पिता की उपस्थिति में बालक सुरक्षित, संस्कारित, शिक्षित होता है।

लेकिन जिन बालकों के माता-पिता नही होते, जब बालक अनाथ हो जाता है। तब उनके जीवन में स्नेह, संस्कार, शिक्षा, सुरक्षा की कल्पना करना मुश्किल है।

हमारा श्री जिनभक्ति मानव सेवाश्रम ट्रस्ट का दृढ संकल्प है कि अनाथ बालकों को आश्रय देना एवं समाज में आदर्श बालक के रुप में प्रस्तुत करना।

जैन मंदिर, जैन उपाश्रय, जैन स्थानक-जैन तेरापंथ भवन, जैन धर्मशाला, जैन स्कूल, जैन होस्पिटल ये सब हमारे जिनशासन के पास है लेकिन जैन बालाश्रम यह प्रकल्प आपके सामने हम प्रथमबार प्रस्तुत कर रहे है।

स्नेह • संस्कार • शिक्षा

जैन अनाथ आश्रम से लाभ

1. जैन जन संख्या वृद्धि

आज जिनशासन का विस्तार बढ रहा है लेकिन जनसंख्या तेजी से कम हो रही है। सम्राट संप्रति के समय में जैनों की जनसंख्या 40 करोड के करीब थी हालांकि अब 70 लाख के आसपास है। जिनशासन की स्थावर एवं जंगम समृद्धि स्वरुप बडे-बडे तीर्थस्थानक, जिनालय, उपाश्रय, धर्मशाला, स्थानक, तेरापंथ भवन एवं हमारे शासन की अमूल्य विरासत ऐसे श्रमण-श्रमणी भगवंतों की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है जनसंख्या... सरकार द्वारा हमारी संस्था को अनाथ बच्चे दिये जाते है। तब सरकार से कमिटमेंट होता है कि, उनको जैनिजम के संस्कार दिये जायेंगे और आधार कार्ड में भी जैन शब्द लिखा जाता है इस प्रकल्प के द्वारा जैन जनसंख्या वृद्धि का हमारा प्रयास है।

2. संस्कार प्रदान

बच्चे को उपहार ना दिया जाए तो वह अकेला कुछ समय के लिए रोयेगा मगर संस्कार ना दिए जाए, तो उसके साथ समाज और देश को भी रोना पडेगा। आपको जानकर विस्मय होगा कि, हमारे आश्रम में 3 वर्ष के नन्हे से बालक ने स्पष्ट उच्चार के साथ बडी सरलता से बडी शान्ति का पाठ सीख लिया। हररोज रात्रि भोजन का त्याग, परमात्मा की पूजा, दो घंटा पाठशाला द्वारा मूल से ही संस्कार सिंचन किया जाता है। धार्मिक संस्करण के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम, पर्यावरण प्रेम, सामाजिक ज्ञान भी प्रदान किया जाता है।

3. संस्कृति रक्षा

पूरे विश्व में आज 15 करोड 30 लाख अनाथ बालक है उनमें से भारत में 2 करोड 96 लाख अनाथ बालक हैं। भारत में आज जितने भी अनाथ आश्रम है वे सब प्राय: ईसाइ धर्म के हस्तगत है, माता-पिता जब निराधार बच्चे को छोड देते है तब वो बालक ईसाई आश्रम में जाता है, बाद में वें बालक उस धर्म का प्रचार-प्रसार करते है। राष्ट्ररक्षा एवं धर्मरक्षा के लिए जरुरी है संस्कृति रक्षा। हमारे आश्रम के बालकों को मूलत: जैन संस्कृति एवं सनातन संस्कृति के पाठ पढाये जाते है, हमारी आर्य परंपरा की विचारधारा वाला बालक बनें यही हमारा प्रयास रहता है। ये तीन लक्ष्य के साथ हमारी संस्था जिनशासन की सेवा में रत है आपका योगदान हमारे कार्य में प्राण संचार करेगा।

आपके दान से बने आश्रम प्यारा,
जहाँ हर बच्चा पाता सहारा।
मिलकर बढ़ाएं
ये कदम,
बनें इनकी
खुशियों का गगन।

एक बात आप याद रखिए कि जहां तक जैन धर्म मानवतावादी था तब तक मनुष्यो की आबादी बहुत थी लेकिन जब से वह सिर्फ मूर्ति वादी बना और केवल पांजरापोल को ही पकड़ के रखा तब यह प्रश्न बन गया। प्रमुखस्वामी महाराज ने जो कहा था कि "मैने और चंद्रशेखर महाराज साहब ने एक ही साथ तपोवन बनवाये थे लेकिन वो सिर्फ दो ही बन पाए जबकि हमने 1200 गुरुकुल बनवा दिए।"

एक बात स्पष्ट कहूं, जैन आगम जीव दया मात्र मनुष्य दया में ही मानता है। जैन आगमो में अनाथालयों का उल्लेख है। पांजरापोल का उल्लेख नहीं है पशु ही धन है और जो धन है वो पांजरापोल में नहीं होता। धन की रक्षा करना जो दया नहीं है हमारा फर्ज है। जब दुष्काल पड़ा तब इतिहास में मनुष्य को बचाने की बात आती है। प्रभु का धर्म पशु नहीं इंसान पालते है।

- विद्वद् शिरोमणी पूज्यपाद धुरंधर विजयजी म.सा.
(हृ.प.साभार)

"छोटा सा दान, बड़ा सा आसमान, बच्चों के सपनों को दे नई पहचान।

स्नेह · संस्कार · शिक्षा

Where Childhood Smiles

प्रणाम,

मेरा नाम दिव्य हैं।

मैं जिन भक्ति शियाल बालाश्रम में रहता हूँ। आप आश्रम की हमारी दिनचर्या के बारे में सोचते होंगे की हम वहाँ क्या करते है।

प्रातः 6 बजे उठकर, योगासन, प्रभुदर्शन और नवकारशी के पश्चात् हमारे प्रिय शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा की पूजा भक्ति करने के बाद हम स्कूल जाते हैं। तत्पश्चात् भोजन और फिर खेलना। सायंकाल पाठशाला में नयी-नयी गाथाएँ करना और नयी-नयी वार्ताऐं सुनना।

नयी-नयी स्तुतियाँ सुनना और सीखना। और यह सब हम अपने धर्मपिता हरजीवनभाई एवं धर्म माता श्री रमिला बहन के साथ ही करते हैं।

आप सोच रहे होंगे की आश्रम में ऐसा जैनत्व कहाँ से? तो यह सब कुछ मुमकिन हुआ, हमारे गुरुदेव परम पूज्य गणिवर्य श्री जिनरत्न विजयजी महाराज एवं जिनभक्ति मानवसेवाश्रम ट्रस्ट एवं आप और आप जैसे ही अन्य दानवीरों की वजह से.......

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा, कि आप मुझसे और मेरे शियाल आश्रम के पूरे परिवार से मिलने अवश्य पधारे।

प्रणाम,

मेरा नाम ममता है।

मुझे वो कुछ भी नहीं मिला जो आप सभी को जन्म से ही मिल गया। लेकिन अब हमारे गुरुदेव परम पूज्य गणिश्री जिनरत्नविजयजी महाराज साहेब ने जिन भक्ति मानव सेवाश्रम के माध्यम से हमारे जीवन उत्कर्ष के कार्य को हाथ में लिया है। तब से हमें सर्वस्व मिल गया है। प्रभु का छत्र मिला, आश्रम की छत मिली, आप सभी की तरह सैंकडो माता-पिता के अलावा और भी बहुत कुछ मिला है। रहने के लिए, भोजन करने के लिए, पहनने के लिए, घूमने के लिए, पढ़ने के लिए और अच्छे से जीने के लिए।

और हाँ, हम ये भी जानते हैं, कि यह सब आपके दानादि की वजह से ही संभव हो पाया है। सर्वप्रिय दानवीरो, आपका बहुत धन्यवाद। समय समय पर हमारा ख्याल अचूक रखिएगाँ, ऐसी प्रार्थना।

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट द्वारा समर्पित ऐसे

श्री वात्सल्यपूरम् अनाथ आश्रम-सुरत

हम आभारी है...

प्रमुख सौजन्यदाता : सीताबेन कांतिलाल शाह, अनावलवाले
हस्ते महेन्द्रभाई शाह, नवसारी

सहयोगी लाभार्थी : शैलेन्द्रजी घीया (जैनमित्र)
राजुभाई शाह (कलामंदिर ज्वेलर्स)

वात्सल्यपूरम् संस्थापक : शीखा जैन

इस आश्रम के प्रकल्प में अमूल्य समय प्रदान करने वाले
गुरुभक्त ट्रस्टीश्री प्रकाशभाई वी. शाह, सुरत

स्थल : वात्सल्यपूरम् सेवा संस्थान
B/62 केशव नगर, उमंरा गांव, सुरत (गुजरात)

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम द्वारा समर्पित ऐसे

श्री वात्सल्यपूरम अनाथालय, सुरत के उद्घाटन समारोह की कुछ झलकियां

पावन सानिध्य :
प.पू.गच्छाधिपति आ.श्री.वि.अभयदेव सुरीश्वरजी महाराजा

शुभ दिन :
मागसर वद-3, रविवार, ता. 16-12-22

लाभार्थी :
सीताबेन कांतिलाल शाह
ह. महेन्द्रभाई शाह अनावल नवसारी

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट द्वारा समर्पित ऐसे

श्री महात्मा ज्योतिबा फुले आदिवासी आश्रमशाला (भिवंडी) नूतनीकरण

- 500 से अधिक बच्चों को जैनत्व के संस्कार प्रदान
- हररोज 5 बार नमस्कार मंत्र का सामूहिक स्मरण
- जिनप्रतिमा दर्शन के बाद ही सभी बच्चे अपने अपने कार्य का शुभारंभ करते है।

हम आभारी है ...

नूतनीकरण के लाभार्थी : मातुश्री अरुणाबेन किर्तीकुमार शाह नगरशेठ परिवार (जसपरावाले)
कवि श्री जाधव गुरुजी
स्थल : श्री महात्मा ज्योतिबा फुले आदिवासी आश्रमशाला
मु. पो. मालोडी नाका, रावत्याच्या पाडा,
खारबांव, ता. भिवंडी, जि. ठाणा

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट द्वारा समर्पित ऐसे

श्री राजेंद्र हनी कॉम्ब बालाश्रम

हम आभारी है ...

लाभार्थी : भरतकुमार सागरमलजी जैन परिवार

स्थल : राजेन्द्र हनी कॉम्ब बालाश्रम
111 से 114 डी विंग, ओसवाल टॉवर 1,
B.P. क्रॉस रोड-4, भायंदर (ईस्ट) - 401 105

स्नेह • संस्कार • शिक्षा

छीन गया जिनसे बचपन का उजास, हम बनें उनके जीवन की आस।

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम द्वारा संचालित

करुणा मंदिर अनाथाश्रम, कात्रज, पुणे का शुभारंभ

लाभ लेने की विविध योजना

41 लाख प्रवेशद्वारा मुख्य नाम	7 x 2 तक्ति
21 लाख हॉल के लाभार्थी	4 x 2 तक्ति
11 लाख रसवंती गृह	2 x 3 तक्ति
5 लाख 55 हजार रूम (4 रूम है)	2 x 2 तक्ति
3 लाख सुवर्ण स्तंभ	
2 लाख रजत स्तंभ	जनरल तक्ति
1 लाख 8 हजार शुभेच्छक	में नाम
1 बच्चे का वार्षिक लाभ = 36 हजार	

स्थल :
जिनभक्ति करुणा मंदिर आश्रम
कात्रज जैन मंदिर के पिछे, प्लोट नं.1,
जय गुरुदेव बिल्डिंग, कात्रज, पुणे 411 046

व्यवस्थापक :
राजमलजी भंशाली एवं सागरभाई शाह
संचालक : शरदभाई

श्री जिनभक्ति करूणा मंदिर पूणे में बच्चों को पाठशाला, पूजा एवं नितिमत्ता के संस्कार दिए जा रहे है।

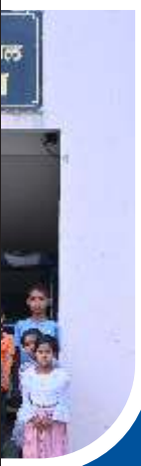

श्री जिनभक्ति बालाश्रम, शियाल के बच्चो को संस्कार प्रदान की झलक

श्री जिनभक्ति बालाश्रम, शियाल के बच्चो को संस्कार प्रदान की झलक

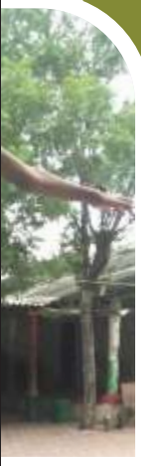

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम, शियाल

परियोजना

- मुख्य हॉल प्रवेशद्वार : 11 लाख

हॉल के अंदर के चार नाम

- पूर्व : 3 लाख 51 हजार
- पश्चिम : 3 लाख 51 हजार
- उत्तर : 3 लाख 51 हजार
- दक्षिण : 3 लाख 51 हजार
- रसोई गृह : 11 लाख
- रूम का लाभ (पाँच रूम) : 5 लाख
- माणेकस्तंभ : 3 लाख 33 हजार
- सुवर्णस्तंभ : 2 लाख 22 हजार
- रजत स्तंभ : 1 लाख 8 हजार

शियाल आश्रम में आजीवन लाभ 1 करोड

(संस्था के मुख्य गेट, रसीद पर आपके परिवार का नाम आयेगा)

- 1,100 : जन्मदिन मनाने का
- 11,000 : पुरे दिन का भोजन
- 13,000 : मिष्ठान के साथ भोजन
- 4,000 : सुबह की नवकारशी
- 5,000 : दोपहर का भोजन
- 4,000 : शाम का चोविहार

आश्रम संचालक

डॉ. हरजीवनभाई, रमिला बहन

स्थल : **जिनभक्ति श्रमबिंदु आश्रम**

मु. शियाल, ता. बावळा, जि. अहमदाबाद

बगोदरा से 7 कि.मि. पालिताणा नळ सरोवर रोड,

संपर्क सूत्र : 91065 81389

शिक्षा, संस्कार और
स्नेह दें साथ,
जीवन में सफल बने अनाथ।

श्री जिनभक्ति लाडकी बालिकाश्रम

बालिकाओं को दिये जा रहे है व्यक्तित्व विकास एवं धार्मिक संस्कार

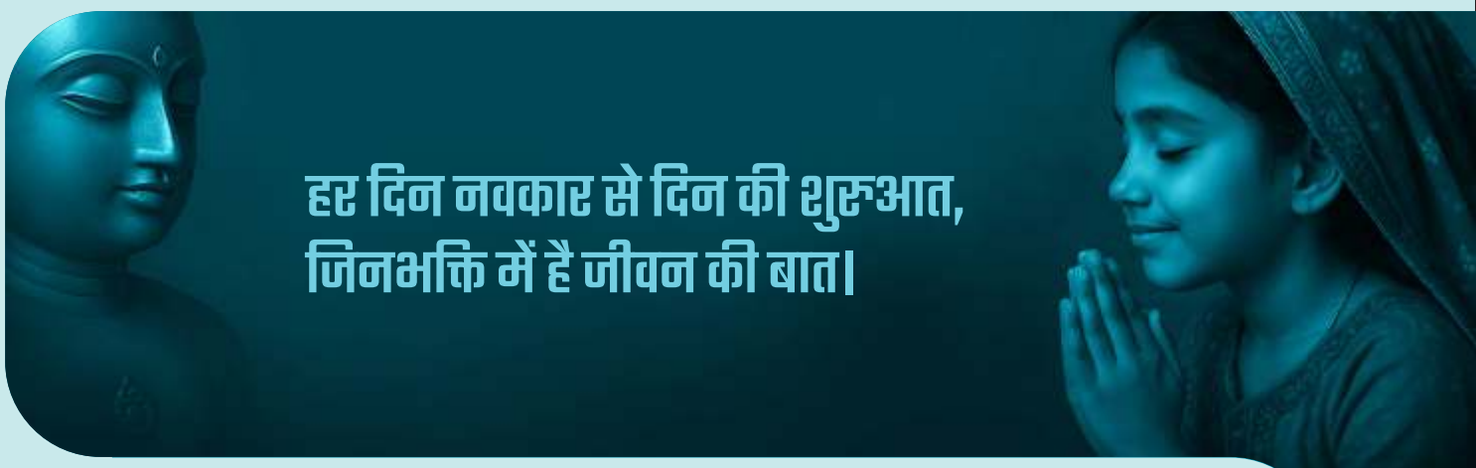

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट एवं
के.के.लाडली केर फाउन्डेशन संयुक्त उपक्रम से

लाडकी बालिकाश्रम योजना

- प्रवेशद्वार मुख्य हॉल : 1 करोड 8 लाख
- वींग मुख्य लाभार्थी : 54 लाख
- प्रवचन प्रार्थना हॉल : 27 लाख
- हॉस्टेल हॉल : 21 लाख
- आर्य कन्या गुरुकुल क्लास रूम : 5 लाख
- हॉस्टेल रूम (पाँच रूम) : 7 लाख
- स्वर्ण स्तंभ : 3 लाख
- रजत स्तंभ : 2 लाख
- शुभेच्छक : 1 लाख

लाडकी विहारधाम योजना

जिनालय मुख्य लाभार्थी
1 करोड 8 लाख

- उपाश्रय मुख्य लाभ : 36 लाख
- श्रमणी उपाश्रय मुख्य लाभ : 36 लाख
- भोजनशाला मुख्य लाभ : 54 लाख

संचालक
रजनीशभाई शाह | उन्नतीबेन शाह

स्थल : आर्यकन्या गुरुकुल
S.U.V. इन्टरनेशनल स्कूल के पास, कामरेज-वडोदरा नेशनल हाइवे,
वलथान, सुरत-बलेश्वर जैन मंदिर से 3 कि.मि. दूर

संपर्क सूत्र - 9106581389

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम द्वारा आयोजित

श्री वीरचंद राघवजी गांधी नाटक एवं अनाथाश्रम के बच्चों द्वारा मानवता महोत्सव की झलकियां

पावन निश्रा :
प.पू.ग.आ.भ. श्री वि. अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा

शुभ दिन :
दिनांक 16.10.22, रविवार

स्थान :
तेजपाल ऑडिटॉरियम, गोवालीया टेंक, मुंबई

स्नेह · संस्कार · शिक्षा

निकुंजभाई (CA)

सूरत की सीविल हॉस्पीटल में एक दंपती अपने बालक को ले गएँ, क्युंकि वो ठीक से आहार नहीं ले रहा था। डॉक्टर ने उन्हें कुछ दवाइयाँ लिखकर दे दी। वहीं पास में अनाथ भाई-बहन खड़े थे, जो ये सब देख रहे थे। बडी ही मासूमियत के साथ उन्होंने डॉक्टर साहब से पूछा, "क्या ऐसी कोई दवाई नहीं है, जिसे लेने के बाद कभी भूख ही ना लगे?" कितनी बेबसी, लाचारी और मजबुरी होगी, उन नन्हीं आँखो और मासूम दिलो में....
ये तो एक उदाहरण हैं। ऐसे तो ना जाने कितने ही मासूम हमारे आस-पास, गली, गाँव, मोहल्ले में होंगे| जिस तरफ कभी हमारा ध्यान हीं नहीं गया या शायद हमनें ध्यान देना हीं नहीं चाहा।

पर हमारे गुरुदेव श्री ने ना सिर्फ इस और ध्यान दिया, अपितु बहुत बड़ा निर्णय भी लिया, इन मासूमों के लिए।
अब तक तो सिर्फ इसाई मिशनरी ही इस क्षेत्र में कार्यशील थी। फिर हिन्दु अनाथाश्रम खुलने लगे। "अनाथाश्रम एक आवासीय संस्थान होते है, जो उन बच्चों की देखभाल के लिए समर्पित होते है, जिनके माता-पिता मृत हो या अनुपस्थित हो या जो उन्हें रखने के लिए तैयार ना हो। ऐसे में ये ईसाइ मिशनरी इन बालको की जिम्मेदारी लेती है, और वो सभी मासूम जानते-अजानते ईसाइ धर्म स्वीकार लेते है। ऐसे में 'जैन अनाथश्रम' खोलना अपने आप में वक्त की सबसे बड़ी आवश्यकता है। विश्व में 15 करोड़ बच्चे अनाथ है, और उसमें से भारत में इनकी संख्या 3 करोड के आसपास है।

भारत में एक बालक का रोज का औसतन खर्च 100 रु. और वार्षिक खर्च अंदाजन 45,000 रु. आता है, वहीं भारत में सभी अनाथ बालकों का प्रतिवर्ष खर्च लगभग (3 करोड x 45,000) = **13 लाख 50 हजार करोड** (13,50,000 रु. करोड) आता है।

भारत वर्ष की 144 करोड की आबादी में 36 करोड़ बालक है, और उसमें से 3 करोड बालक अनाथ है, जो 8.33% है। ऐसे में इन बालको की रवुध लेना एक मानवता के लिए तो मददरुप है ही, साथ ही साथ जैनत्व के लिए भी।

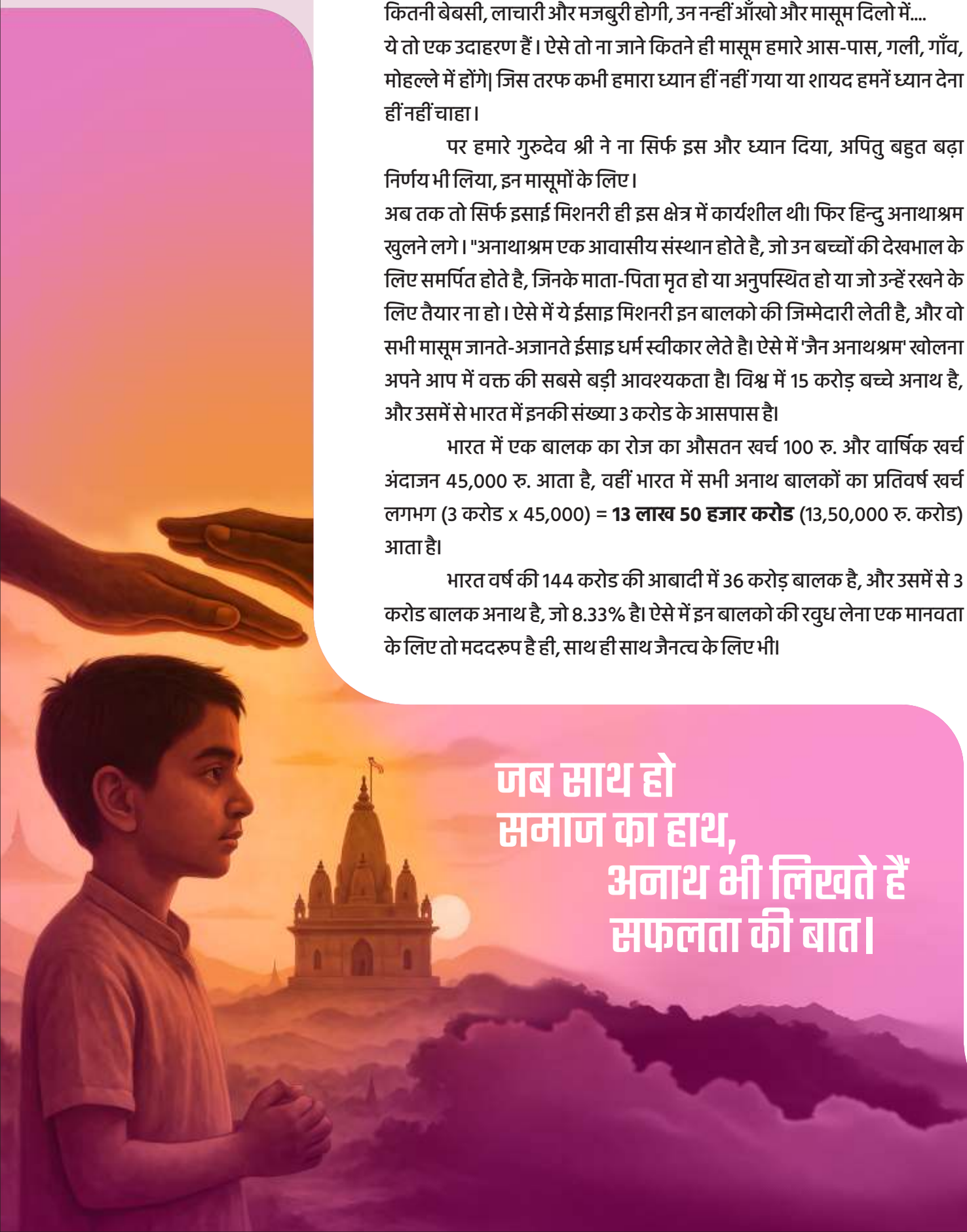

जब साथ हो
समाज का हाथ,
अनाथ भी लिखते हैं
सफलता की बात।

विश्व की परिस्थिति (8110133900 = 811 करोड जनसंख्या)

करोड	करोड/लाख	विगत	फोर्म्युला	टका
15.3	करोड	विश्व में अनाथ बालक है	15.30/200 Cr	7.65 %
16.8	करोड	बाल मजदूर है	16.80/200 Cr	8.40 %
26.3	करोड	बालको और युथ स्कुल नहीं जाते	26.30/200 Cr	13.15%
6.9	करोड	पोषणवाला आहार नहीं मिलता	6.9/200 Cr	3.45 %
60 लाख	लाख	5 साल पहेले मर जाता है	60 लाख/6.29 Cr	0.09 %
6.6	करोड	स्कुल में भूखे पेट जाते है	6.6/134 Cr	4.93 %

***200 (200 करोड कुल बालक पुरे विश्व में 15 कम उम्र वाले है)**

भारत की परिस्थिति (1440810216 =144 करोड जनसंख्या)

करोड	करोड/लाख	विगत	फोर्म्युला	टका
3	करोड	अनाथ बालक है	3/36 Cr	8.33 %
78 लाख	लाख	बाल मजुर है	78 लाख/36 Cr	2.10 %
1.29	करोड	बालको और युथ स्कुल नहीं जाते	1.29/36 Cr	3.50 %
43	लाख	पोषणवाला खाना नहीं मिलता	43 लाख/36 Cr	1.12 %

***36 (36 करोड कुल 15 साल के कम उम्रवाले भारत में रहते है)**

WORLD POPULATION AGE WISE

वर्ष ग्रुप	करोड	टका
5 से कम	65.26	8.04 %
5 से 15	134.74	16.59 %
15 से 25	126.00	15.52 %
26 से 64	402.00	49.51 %
65 से आगे	84.00	10.34 %
कुल	812.00	100.00 %

INDIA POPULATION AGE WISE

वर्ष ग्रुप	करोड	टका
0-14	36.44	25.31 %
15 से 64	97.63	67.80 %
65 से आगे	9.93	6.90 %
कुल	144.01	100.00 %

संवेदना से भरें जीवन उनका, जिनका कोई नहीं है अपना।"

स्नेह · संस्कार · शिक्षा

पोपटलाल चुनीलाल शाह
(साबरमती वाले)

support of faith

विश्वास का सहारा

आर्य प्रजा के लिए इच्छनीय ना होने पर भी "अनाथ आश्रमों को सहयोग देकर इच्छनीय बनाना ही पड़ेगा। आज की पीढ़ी एक या दो से ज्यादा संतान नहीं चाहती, ऐसे में वो दिन दूर नहीं जब आर्य और अनार्यो की संख्या का फासला बहुत बढ़ जाएँ।

ऐसे में ये सभी अनाथ बालक हमारी प्रजा की आबादी बढ़ाने के लिए मददरुप साबित होंगे। इसके और भी विचारणीय पहलु है। जैसे, की

1. इन सभी "अनाथ बालको" की अनुकंपा होगी।
2. जब ये बालक 'सनातन धर्म' और 'जैन धर्म' के "सुसंस्कारो" में रंग जाएगें तब उनको की गयी ये सहायता "साधर्मिक भक्ति" कहलायेगी।
3. यदि ये बालक "अनार्य धर्म प्राचरको" द्वारा "अनार्य धर्म" अंगीकार कर लेते है, तो वे माँसाहारी, अंडाहारी, मत्स्याहारी, अभक्ष्याहारी, दुराचारी, मदिरापान आदि कई कुभक्षण कर, जीव हिंसक बनकर, धर्म, मानव और पशु सभी के लिए 'भयजनक और आपत्तिजनक' बन जाएंगे।
4. आप सभी धर्मानुरागी महानुभावो की वजह से ये सभी मासूम इन पापकर्मो से खुद को परे रख पाएँगे और आत्मकल्याण कर पाएँगे।

   इस तरह हम में सेकडों अबोल जीवो को अभयदान भी दे पाएंगे। क्युंकि इन बालको में से एक भी बालक यदि अनार्य धर्म स्वीकारता है, तो वे अपनी संपूर्ण आयुष्य दौरान जितना भी माँसभक्षण करता, अब उसी बालक के जैन धर्म अंगीकार करने से उन सभी जीवो को अभयदान मिल जाएगा। कही ना कहीं आप सभी धर्मानुरागीओ द्वारा जीवदया का बहुत बड़ा काम अप्रत्यक्ष रुप से हो जाएगा।
5. सभी बालक "जैन अनाथाश्रम" में जैन धर्म के संस्कार पाकर प्रभुपूजा, अंग रचना, बड़े-बड़े पूजन पढ़ते, पढ़ाते सीख जाएगें। साथ ही साथ जैन धर्म के संस्कार पाकर एक योग्य मानवी भी बनेंगे।

   इन्हे ऐसी शिक्षा दी जाएंगे कि प्रतिक्रमण सीखकर छोटे क्षेत्रो में जहां साधु-साध्वीजी भगवंत का सान्निध्य ना हो सके वहां जाकर पर्युषण की आवश्यक क्रियाएँ भी करवाने की योग्यता इनमें हो। धार्मिक विधि-विधान भी सिखाएँ जाएँगे, ताकि ये विधिकार एवं उत्तम कोटि के उत्तर साधक भी बन सके।
6. ये बालक इतना सुसंस्कृत होने के बाद भविष्य में पाठशाला के "शिक्षक या 'पंडित' भी बन सकते है। और तो और इनमें से कुछ गाँव-शहरों के जिनालयों तथा तीर्थो को आशातना व विराधना से बचाएँ ऐसे ज्ञानसंपन्न 'पूजारी' भी बन सकते हैं।
7. ये बालक 'माता-पिता' के भक्त तो बनेंगे ही, साथ ही साथ, प्रभुप्रेमी, गुरुप्रेमी, देशप्रेमी, धर्मप्रेमी, संस्कारप्रेमी, जीवदया प्रेमी, संस्कृति प्रेमी, एवं पर्यावरण प्रेमी भी बनेंगे।
8. बालको को ऐसा निष्पाप जीवन जीना सिखाया जाएगा, कि ये औरो को भी प्रेरणा देंगे और हो सकता है, कि इनमें से कुछ भाविक प्रभु के 'सर्व विरति' के मार्ग का भी अनुसरण कर ले।

9. संभव है, कि यहाँ से निकलने के बाद अपने जीवन में आयी सफलता को देख भविष्य में ये बालक अनाथाश्रम को मददगार बनकर अपना फर्ज निभाएँ ।
10. भविष्य में कोई बालक अपनी पालनहार ऐसी मातृसंस्था का आधार भी बन सकता है।
11. इससे हमारी प्रजा की गिनती भी बढ़ जाएँगी ।
12. जो बालक 'अनार्य धर्मी' बनकर, आतंकवादी बनकर हमारा ही शत्रु बनने वाला था, वो अब हमारा "मित्र और भाई" बनेगा ।
13. भगवान भरवाना यदि नये गहने बनवाने जैसा है, जो नया साधर्मिक बनाना, भगवान के, 'नये वस्त्र' बनाने के समान हैं।

    प्रथम कार्य यदि इमारत तुल्य है, तो दूसरा कार्य उस 'इमारत की नीव' जितना ही महत्त्वपूर्ण है।

    जैसे हर इमारत की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है, वैसे ही बिना वस्त्रों के गहनो की कोई शोभा नहीं। बस वैसे ही "जैन श्रावक और साधर्मिको के बिना धर्म धर्म का भविष्य नहीं ।"
14. कहा जाता है, कि "करण करावण ने अनुमोदन सरखा फल निपजाऐ" 'करण' का धर्म तो अनाथ बच्चो को ही मिलेगा, परंतु आप सभी इन अनाथ बच्चो के नाथ (इहलौकिक द्रव्य सहायता से द्रव्य नाथ) बने है, इसलिए आप सभी 'करावण धर्मी' है।

    और समाधिमय जीवन देकर, 'सद्गतियो' द्वारा मोक्षमार्ग पर गतिशील करके वेगवान करना है, अतः ये हमारा अनुमोदना का धर्म भी हुआ।
15. कोई भी तीर्थकर भगवान तीर्थकर नाम कर्म निकाचित करते है, वहाँ से 100% अभयदाता होते है। परंतु 'विरति दान' और 'ज्ञान दान' देने से पहले 'अनुकंपा दान' देते हैं। दिक्षा के पूर्व जो दान दिया जाता है, वो ना तो.....

    सुपात्र दान है

    ना जीवदया है

    ना उचित दान है,

    ना कीर्तिदान है।

    परंतु वो मात्र और मात्र 'अनुकंपा दान' ही है। जीवदया मात्र अबोल मूक जीवों की होती है, और अनुकंपा मात्र और मात्र मनुष्यों की ही होती है। अनुकंपा से जीव निर्भय बनता है. इसलिए ये भी एक प्रकार का अभयदान ही है, व्यवहारिक 'भाषा में हम कहते भी है, तु फिक्र मत कर मैं बैठा हूँ।
16. आर्य सुहस्ति सूरिजी ने भी संप्रति महाराजा के पास जैन धर्म का प्रचार करवाने के लिए अनुकंपा दान से ही शुरुआत की थी। अनुकंपा दान, दुःखी और पीडित जीवो को धर्म के प्रति "आकर्षित करता है" जैसे "साधारण" का धन सभी क्षेत्रो में जा सकता है, वैसे ही, 'अनुकंपा दान' से प्रभावित जीव, 'सम्यक् दर्शन' प्राप्त करके, 'मोक्ष' तक पहुँच सकता है।
17. अनार्य धर्मों में 'सुपात्रदान' और 'जीवदया' का तो कहीं विवेचन ही नहीं है। फिर भी वे लोग भी मानव सेवा का काम करके द्रव्यदान से अपने धर्म का कद बढ़ा रहे हैं।क्यूंकि सर्वविदित है, कि "भूखे पेट भजन नहीं कर सकते है पहले पोटोबा (पेट पूजा) फिर विठोबा (प्रभु भजन)"
18. बालक को सुख देना उत्तम है। उसे सुखी बनाने के साथ-साथ 'पाप से बचाकर धर्मी बनाना तो सर्वोत्तम है।'
19. आप सभी का ये द्रव्य 'रोकाण' (Investment) दो घड़ी के एक सामायिक के "फल" जैसा ही है। 48 मिनिट का 'रोकाण' और 125, 925, 925 पल्योपम की 'देवायुष्य का बंध। क्यूँकि ये सभी बालक जितना भी धर्म करेंगे उसके छठे भाग का पुण्य तो आप सभी रोकाणकारी (Investors) को भी मिलेगा। ऐसा जैन शास्त्र में कहा गया है।'

"कालेदिन्नस पहेवागस्स अन्धोण तीरए काउं ।
तरसेपडकालपणमियरस गणदंतया णत्थि ।"

अर्थात् योग्य समय पर दिया गया उपहार अमूल्य है, और वही चीज आप अनुचित समय पर देने जाएगें तो उसको स्वीकार करने वाला कोई नहीं ।

देव द्रव्य में दिया डोनेशन समुद्र को एक लोटे जल के उपहार समान है। अनाथाश्रम में दिए गए डोनेशन पानी के लिए तड़पते पक्षी को पानी पिलाकर जीवनदान जैसा है। मंदिर बनाना और भगवान भरवाना बहुत-बहुत जरूरी है, मगर यदि नई पीढ़ी के संस्करण की उपेक्षा हुई तो कदापि मुमकिन है, कि इसी जिनालय में नमाज पढ़ाई जाएँ और वहाँ के मूलनायक 'इसुख्रिस्त' हो । और हमारा जिनालय सर्वधर्म का मंदिर बन जाएगा ।

विवेक, आज का औचित्य भगवान भरवाना तो है, ही! पर उससे भी महत्त्वपूर्ण उस बालक को तैयार करना है, जो जिनालय जाकर जिनपूजा करें। जैनत्व को दिल से अंगीकार करे और उसकी रक्षा करें ।

एक बालक का सुसंस्करण तात्विक दृष्टि से भगवान भरवाने जितना ही पुण्य का कार्य है। एक अनाथाश्रम का निर्माण वास्तविकता में महातीर्थ के निर्माण जैसा सुकृत है।

तो आइए जैन धर्म के विस्तार और रक्षा के लिए अपने कदम बढ़ाएँ और "जैन अनाथाश्रम" के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दें ।

आओ हम इनके होठों की मुस्कान बने, इनके जीवन में खुशियों की उडान बने...

कांदिवली मानवता महोत्सव

श्री महावीर नगर श्वे. मू. जैन संघ, शंकरलेन कांदिवली में शीयाल आश्रम के बच्चों द्वारा मानवता महोत्सव का आयोजन हुआ
शुभ दिन : रविवार, दि. 25.8.2024

स्नेह • संस्कार • शिक्षा

थोड़ा सा दान, बड़ा सा आसमान,
अनाथों के जीवन में लाए नया जहान।
मिलकर करें ये नेक काम,
बने हर बच्चा खुशहाल इंसान।

जिनभक्ति मानव सेवा ट्रस्ट द्वारा समर्पित ऐसे

मुस्कान वात्सल्य धाम सेवा संस्थान (डूंगरपूर)

विगत 33 सालों से यहां मानवता का यज्ञ चल रहा है

यहां 250 से अधिक अनाथ बच्चे, 250 से अधिक गरीब, शोषित-पीड़ित बालिकाएं।
निराश्रित, बेसहारा, मानसिक रोगी महिलाएं, वृद्धजन, दिव्यांग ऐसे 700 से अधिक व्यक्तिओं की आवास,
भोजन, पोषण, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की जाती है

संस्थापक
सेवा आचार्य भरतभाई नागदा (जैन)
स्थल
मुस्कान वात्सल्य धाम
रेलवे क्रॉसींग के पास, बडगाव,
डूंगरपुर (राज.)

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट

ट्रस्टी गण-पदाधिकारी

शैलेषभाई जोगाणी धानेरा	वालकेश्वर	9820003462
नितीनभाई वोरा	नवजीवन संघ	9833122175
रमेशभाई वारैया	वालकेश्वर	9820037442
महेंद्रभाई शाह अनावल	नवसारी	9265208504
शैलेन्द्रभाई घीया	जैनमित्र	9320640066
निखिलभाई	चर्चगेट	9810052304
CA अमितभाई झवेरी	गोवालिया टेंक	9821046690
हरेशभाई शाह (C.A)	पुणे	9820045822
अमृतभाई जैन	वसई	8390409133
विमलचंदजी (एस. कपूर)	मुंबई	9819291985
निलेशभाई गांधी	भायंदर	9322250553
अभिषेकभाई झवेरी	मुंबई	9833079199

Legal & Account Advisor - अेड. सौरभभाई	मरीन ड्राईव	9987241896
Finance Advisor - C.A राजेशभाई दोशी	बाबुलनाथ	9820585611

सलाहकार

कवि युगराजजी
प्रवीणभाई वखारीया, कांदीवली
दिनेशभाई शाह, पाटण
माणेकचंदजी लुक्कड
अरविंदभाई, मरिन ड्राइव
प्रकाशभाई वी. शहा
कीरीटभाई, पुणे
प्रवीण भाई आत्मारामभाई शाह, अहमदाबाद
संतोषभाई, नवसारी (U.S.A)
विपुलभाई, फोर्ट

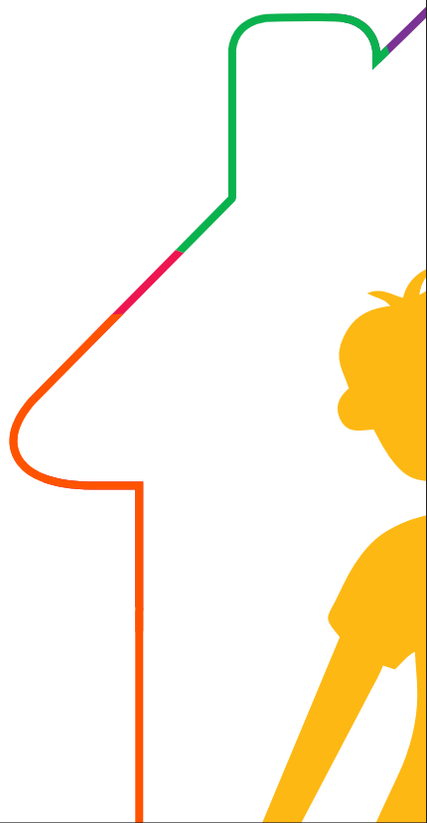

विशेष सहयोग

साहित्य रत्न डॉ. मंजुबेन मंगल प्रभातजी लोढा
संगीतरत्न : नरेन्द्रभाई वाणीगोता

कार्यकर्ता

हसमुखभाई नवजीवन		9867200250
राजेन्द्रभाई	प्लेजेंट पेलेस	9820555399
झुलेशभाई जैन	मरीन ड्राईव	9987129318
श्रीपालभाई (S.R.K.)	-	9076296587
प्रकाशभाई (घंटावाला)	गोडीजी	9284242226
रमणीकभाई	पुणे	8087593942
भरतभाई जैन		9867180613
झवेरजी मुणोत		9821116338
राजीवभाई (S.R.K.)		7039090909
निमेशभाई शाह	(गोडीजी)	9820237784
संजयभाई कामदार		9869284085
सचीनभाई	कांदिवली	93222 57706
चीरागभाई	चीरा बझार	79771 74989
जैनमभाई शाह	कडोली	81539 72018
अक्षयभाई (कडोली)		99670 52425
आनंदभाई	वसई	90497 84532

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट अनाथ आश्रम

1. शियाल (बगोदरा गुजरात) बालक संख्या : 50
2. करुणा मंदिर (कात्रज पुणे) : 25
3. जिनभक्ति आश्रम (धानेरा गुजरात) : 23
4. लाडकी सुरत संख्या : 50 (संयुक्त उपक्रम से)
5. भिवंडी आदिवासी आश्रम संख्या : 500 (आर्थिक सहयोग)
6. भायंदर आश्रम संख्या : 30 (आर्थिक सहयोग)
7. वडगांव (शंखेश्वर तीर्थ के पास) संख्या : 80 (आर्थिक सहयोग)
8. मुस्कान आश्रम (डुंगरपूर राजस्थान) संख्या : 300 (आर्थिक सहयोग)
9. वात्सल्य पूरम सेवा संस्था (सुरत) संख्या : 30 (निर्माण में संपूर्ण आर्थिक सहयोग)

कुल आश्रम : 9
कुल बालक संख्या : 1088

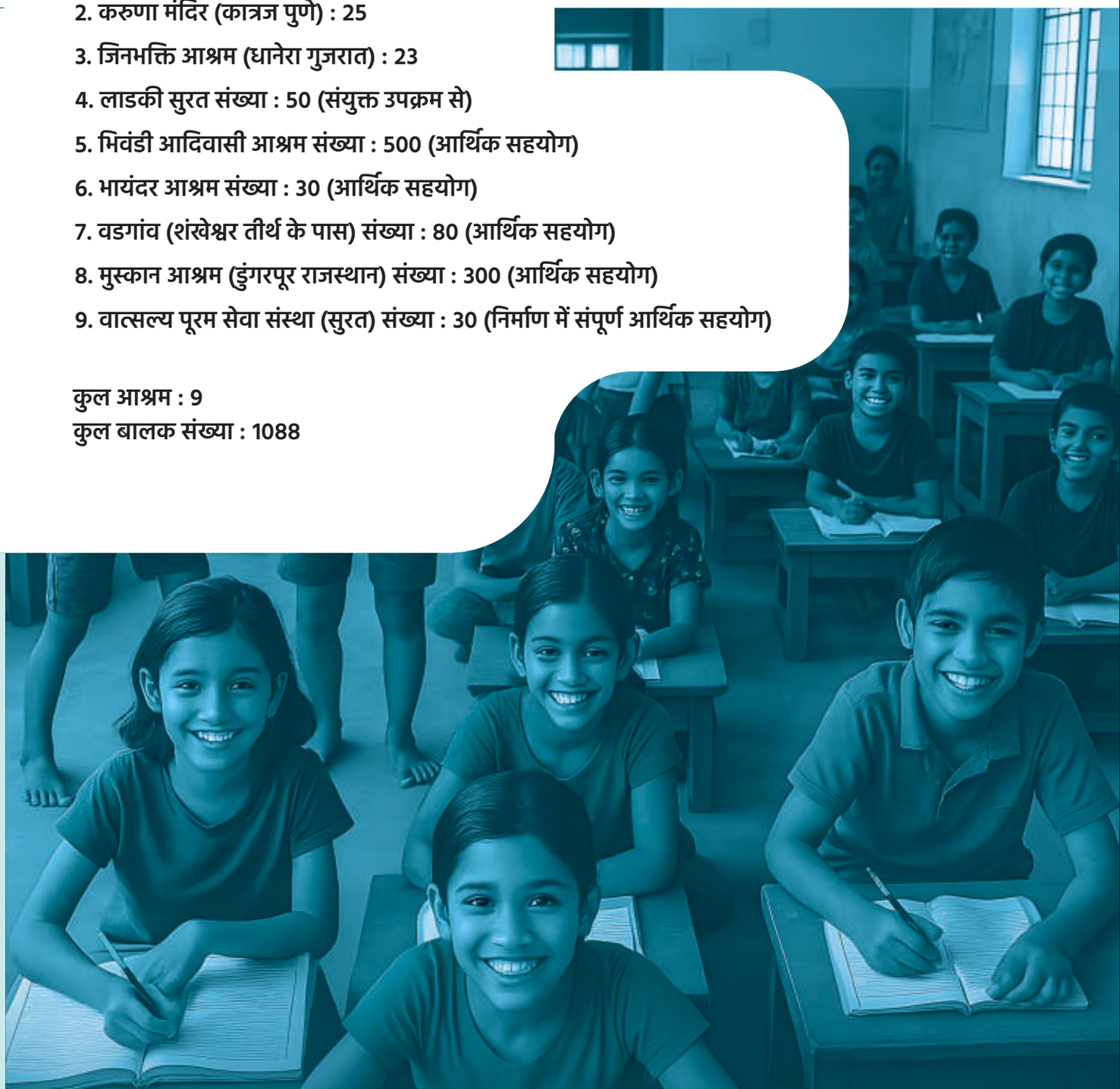

आपका दान, बच्चों की नई उम्मीद

हर अनाथ बच्चा एक सुनहरे भविष्य का हकदार है, लेकिन इसके लिए उन्हें आपके सहयोग की जरुरत है। आपका छोटा सा दान उनके जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है — शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्नेह की छाँव प्रदान कर सकता है। जब हम मिलकर उनके लिए कदम बढ़ाते हैं, तो हम न केवल उनकी ज़िंदगी बदलते हैं, बल्कि एक बेहतर समाज का निर्माण करते हैं। आपकी मदद से अनाथ बच्चे अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं और एक खुशहाल जीवन जी सकते हैं। आइए, इस नेक काम में हमारा साथ दें और उनके जीवन में आशा की नई किरण लाएं। साथ मिलकर हम एक उज्जवल कल की नींव रख सकते हैं।

स्नेह · संस्कार · शिक्षा

JinBhaktiAnathAsharm

Whatsapp Group | Website | Instagram | Youtube

पत्र व्यवहार हेतु संपर्क

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट

c/o सौरभभाई नगरशेठ
78/48, 5 वां माला, पाटण जैन मंडल,
बिल्डींग नं.3, एफ रोड,
एच.वी.बी. अकेडेमी के बाजु में,
मरीन ड्राईव, मुंबई-400 020.
मो.नं. : 9987241896

जिनभक्ति वेबसाईट

jinbhaktimanavseva.com

पूज्य गुरुदेव संपर्क

मुकेशभाई : 9106581389

Be the Hope in an

ORPHAN'S HEART

BANK DETAIL		
NAME	:	JINBHAKTI MANAV SEVA ASHRAM
BANK /BRANCH	:	SBI BANK / WALKESHWAR
A/C No	:	40969931270
IFSC CODE	:	SBIN0004728
संपर्क	:	9987241896

कृपया बैंक में दान जमा करने के बाद अपना पे-इन स्लिप या NEFT/RTGS UTR नंबर और नाम, पता ऊपर दिए गए नंबर पर व्हाट्सएप करें।**(ताकि हम आपके दान की रसीद भेज सकें और उचित रिकॉर्ड रख सकें।

विशेष :- **दान दाता परिवार को 80G,तथा CSR, का लाभ प्राप्त होगा**

स्नेह · संस्कार · शिक्षा

जिनभक्ति मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट

C/o नितिनभाई वोरा,

नेशनल इंटरप्राइजेस, G-10C. लक्ष्मी वुलन ईस्टेट, शक्ति मिल लेन, महालक्ष्मी (वेस्ट), मुंबई - 400 011

JAI BHAIRAV GRAPHICS
098213 44432